आधी आबादी

डॉ. संदीप श्रीराम पाईकराव
डॉ. संतोष विजय येरावर

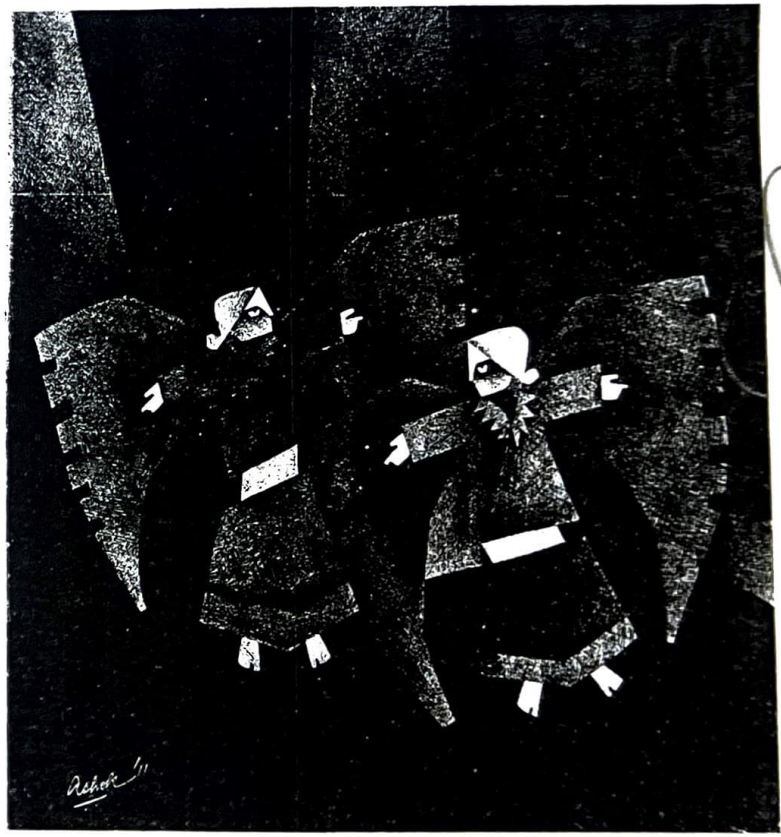

360

आधी आबादी

डॉ. संदीप श्रीराम पाईकराव, डॉ. संतोष विजय येरावर

परिकल्पना
बी-7, सरस्वती कॉम्प्लेक्स, तृतीय तल, सुभाष चौक
लक्ष्मीनगर, दिल्ली-110092, मो.: 9968094132
e-mail : parikalpana.delhi2016@gmail.com

ISBN 978-93-87859-84-5

परिकल्पना

© सम्पादक
प्रथम संस्करण : 2018
मूल्य : 525
ISBN : 978-93-87859-84-5

शिवा नंद तिवारी द्वारा *परिकल्पना*, बी-7, सरस्वती कामप्लेक्स,
सुभाष चौक, लक्ष्मी नगर, दिल्ली-110092 से प्रकाशित और
शेष प्रकाश शुक्ता, गाजियाबाद-201010 से टाइप सेट होकर
कामैक्ट प्रिंटर्स, दिल्ली-110032 में मुद्रित

वन्दनीय गुरुवर्या
श्रीमती राधा गिरधारी जी
के चरणों में...

178

स्त्री विमर्श : अस्मिता का सवाल 23
—डॉ. मनोज पाण्डेय
उषा यादव के कथा-संसार में स्त्री विमर्श 32
—डॉ. वेदप्रकाश अमिताभ
इक्कीसवीं सदी में पुरुषसत्तात्मक समाज से संघर्षत नारी 43
—डॉ. पठान रहीम खान
नारी विमर्श के दायरे में प्रवासी कहानी 48
—डॉ. शबाना हबीब
हिन्दी का सिनेमाई संसार और उसके महिला पात्र 52
—डॉ. रश्मि
राजी सेठ की कहानियों में स्त्री-विमर्श 59
—डॉ. डी. उमादेवी
स्त्री अस्मिता एवं मानवीय संवेदना को उजागर करने वाली... 65
—डॉ. ए.डी. चावड़ा
इक्कीसवी सदी के नारी का अतीत, वर्तमान और भविष्य की संवेदना 70
—डॉ. संतोष रामचन्द्र आडे
'धूल पौधों पर' उपन्यास में नारी-संघर्ष और अंतर्द्वन्द्व 78
—डॉ. गिरजाशंकर गौतम
अनामिका की कविताओं में स्त्री-विमर्श 82
—डॉ. निम्मी ए.ए
आधुनिकता हिन्दी साहित्य में नारी-विमर्श 89
—डॉ. के. श्याम सुन्दर
हिन्दी आत्मकथाओं में नारी संघर्ष के विविध आयाम 93
—डॉ. शिवहर बिरादर

५६२

आधुनिक शहरी नारी की समस्याएँ 97
—डॉ. टी. सुमती
समकालीन साहित्य में स्त्री-विमर्श 100
—डॉ. सीमा सिंह
कृष्णा सोबती के उपन्यासों में स्त्री-विमर्श 105
—डॉ. सुशीला रानी
समकालीन हिन्दी नाटकों में स्त्री-विमर्श 113
—डॉ. लव कुमार
समकालीन कथा साहित्य में स्त्री-विमर्श : एक विशेषण संदर्भ 122
—डॉ. खाज़ी एम.के.
समकालीन स्त्री कविताओं में स्त्री छवि 129
—डॉ. नवीन नन्दवाना
भारतीय संदर्भ में महिला सशक्तीकरण एवं उनके अधिकार 140
—डॉ. राहुल कुमार
स्त्री-विमर्श और पुरुष-विमर्श 148
—डॉ. राजेश कुमार
नासिरा शर्माजी के नारी पात्रों का समाजशास्त्रीय अध्ययन 154
—डॉ. राजश्री भामरे
21वीं सदी की हिन्दी कविता में स्त्री 169
—डॉ. सहदेव वर्षाराणी निवृत्तीराव
समकालीन भारतीय साहित्य में स्त्री-विमर्श 175
—डॉ. टी. सुनीता
नासिरा शर्मा के उपन्यासों में नारी संघर्ष 179
—हेमलता
अंतिम दशक की कहानियों में कामकाजी नारी की समस्याएँ 183
—डॉ. अरुण हेरेमत
स्त्री पराधीनता और कितने सदियों तक 187
—प्रा. डॉ. टी. श्रीनिवासुलु
समकालीन कथा साहित्य में स्त्री-विमर्श 195
—डॉ. लोकेश्वर प्रसाद सिन्ह
आधुनिक शहरी नारी की समस्याएँ 198
—डॉ. टी. सुमती
उत्तर आधुनिकता : नारी-विमर्श 201
—एम. रामचन्द्रम
नारी स्वभाव के विभिन्न आयामों सफल प्रतीक : शीलवती 205
—ताल्ला निरंजन
हिन्दी साहित्य में ग्रामीण नारी की समस्याएँ 208
—डॉ. ई. राजा कुमार
हिन्दी साहित्य में चेतना युक्त नारी 211
—डॉ. ई. सुनीता
शिवानी की कहानियों में नारी पात्रों की मनःस्थिति 214
—प्रा. शेषगणी गफुरसाहेब
उषा यादव के साहित्य में नारी 219
—नितिन शेटी
समकालीन हिंदी कविता में अग्नि व्यक्त नारी संवेदना 227
—डॉ. संतोष विजय येरावार
नारी विमर्श की सशक्त हस्ताक्षर—मीराबाई 233
—श्रीमती मीरा मुण्डा

प्रभावित है।

सन्दर्भ

1. डॉ.दुर्गाप्रसाद रणसुभे, आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृ. 266
2. डॉ. विजय बहादुर सिंह, मैत्रेयी पुष्पा स्त्री होने की कथा, पृ. 7
3. समकालीन कथा साहित्य में नारी चित्रण, इंटरनेशल जर्नल अप्लाईड रिसर्च-2017
4. डॉ. मंगल कप्पीकेरे, साठोत्तरी हिन्दी लेखिकाओं की कहानियों में नारी, विकास प्रकाशन, कानपूर पृ.40
5. डॉ. विजय बहादुर सिंह, मैत्रेयी पुष्पा स्त्री होने की कथा, पृ. 39
6. राजेंद्र यादव, मैत्रेयी पुष्पा : यमुना और चंबल का पानी (संस्मरण) पृ. 59
7. मैत्रेयी पुष्पा, चाक, इदन्नमम, अल्मा कबूतरी
8. सम्पादक सत्यकृत, समकालीन साहित्य समाचार(पत्रिका) अक्तूबर-2012

समकालीन स्त्री कविताओं में स्त्री छवि

डॉ. नवीन नन्दवाना

हिन्दी कविता की धारा विविधमुखी रही है। समय, काल और परिस्थितियों को ध्यान में रखकर इसने अपनी धारा व दिशा में युगानुकूल परिवर्तन किया है। आजादी के बाद के हिन्दी साहित्य में यह बदलाव हमें तुरंत और वैविध्यपूर्ण दिखाई पड़ता है। सत्तर के दशक तक आते-आते साहित्य के मानबिन्दुओं में कुछ बदलाव आया। अब तक जो गौण समझ कर हाशिये की ओर था, वह अब केन्द्र की ओर आने लगा। साहित्यकारों का ध्यान अब स्त्री जीवन और उससे जुड़े मुददों की ओर गया। अब स्त्री का जीवन, उसके सुख-दुख और अस्तित्व की बातें प्रमुखता से उठाई जाने लगीं। पुरुष रचनाकारों ने भी इस दिशा में एक अच्छी पहल की। समय के साथ-साथ कई स्त्री रचनाकारों ने भी कविता, कहानी और उपन्यास के माध्यम से स्त्री के अधिकारों व जीवन यथार्थ को उद्घाटित करने का प्रयास किया। थोड़े ही समय में स्त्री जीवन से जुड़े साहित्य लेखन ने एक विमर्श के रूप में अपनी उपस्थिति दर्ज करवा दी। हिन्दी के ख्यातनाम लेखक राजेंद्र यादव और हंस पत्रिका ने भी इस दिशा में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

आज के हिन्दी जगत् में यदि हम स्त्री रचनाकारों की ओर दृष्टि डालें तो हमारे ध्यान में देश के कई महत्त्वपूर्ण नाम उभर कर आते हैं। हिन्दी कविता को लेकर विशेष रूप से बात की जाए तो भी सुनीता जैन, गगन गिल, कात्यायनी, सविता सिंह, अनामिका, रंजना जायसवाल, सुधा सिंह, वर्तिका नंदा, कुसुम कुमार, रजनी तिलक, नीलेश रघुवंशी, निर्मला गर्ग आदि के नाम प्रमुखता से ध्यान में आते हैं। इन रचनाकारों ने अपनी कविताओं के माध्यम से स्त्री पक्ष के यथार्थ को अभिव्यक्ति देने का प्रयास किया है। स्त्री विमर्श भारतीय साहित्य में बहुत पहले से था। मध्यकालीन साहित्य को देखें तो स्त्री मुक्ति का स्वर बहुत पहले ही भक्तिमती मीरा ने बुलंद किया था। वह मध्यकाल में राजसत्ता को चुनौती देने का साहस रखने वाली